International Research Journal ISSN-0975-3486 VOL. I * ISSUE—3 &4 RNI : RAJBIL/2009/30097

शोध पत्र

चंदेरी साड़ी बुनकरों की समस्याओं का अध्ययन

* डॉ. कविता अग्रवाल **जयप्रकाश अहिरवार

*सहायक प्राध्यापक अर्थशास्त्र शा. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, इन्दौर (म.प्र.)
** पी.एच.डी. शोधार्थी, देवी अहिल्या विश्वविद्यालया, इन्दौर (म.प्र.)

Dec.-09—Jan.-2010

मध्यप्रदेश के अशोकनगर जिले की चन्देरी तहसील का विशेष ऐतिहासिक महत्त्व है। चन्देरी अपनी विश्व प्रसिद्ध साड़ियों के लिए मशहूर है एवं यह साडी बुनकरों का प्रसिद्ध परम्परागत केन्द्र रहा है। यहाँ की साड़ियाँ प्रतियोगिता में बेहतर सिद्ध होती है। चन्देरी साड़ी का, मध्यम और सम्पन्न समाजों में एक विशेष स्थान है तथा सभी जगह इनकी माँग अत्यधिक रहती है। लोकप्रिय इतनी है कि अन्य सिल्क साड़ियाँ भी बाजार में इसी नाम से बेची जाती है। चन्देरी बुनकर भारत की सबसे खूबसूरत, पतली, जरीदार एवं झिलमिलाती साड़ियों का निर्माण करते हैं जो कि गर्मियों में भी अत्यधिक आरामदायक होती हैं। परम्परागत रूप से हाथ से काते हुए शुद्ध सूती धागे से बुनी चन्देरी साड़ियाँ बड़े पैमाने पर राजघरानों द्वारा संरक्षित थीं। नाजुक, हल्के रंग और रुपांकनों के डिजाइन अद्वितीय रहे हैं। इनके आश्चर्यजनक डिजाइन मन्दिरों एवं प्रकृति से प्रेरित हैं।

चन्देरी में साड़ी बुनाई का धन्धा सदियों पुराना रहा है। कुल जनसंख्या का लगभग 60 प्रतिशत जनसंख्या हथकरघा एवं इससे सम्बन्धित क्रियाओं में संलग्न है। आज भी प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से लगभग 18000 लोग अपने जीवनयापन के लिए इस पर आश्रित हैं। बुनाई कार्य अधिकतर महिलाओं द्वारा किया जाता है। जो कि स्वनिर्भरता का प्रतीक है। बनुकरों द्वारा परम्परागत रूप से बुनाई कार्य उनके घर पर ही पीढ़ी दर पीढ़ी किया जाता है।

बुनकरों में सर्वाधिक 70 प्रतिशत अल्पसंख्यक एवं 30 प्रतिशत अनुसूचित जाति के हैं। वर्तमान में मौजूदा करघे, सक्रिय करघे, सहाकरी क्षेत्र में करघे, सहकारी क्षेत्र से बाहर सक्रिय करघे, पंजीकृत सरकारी सोसायटियाँ एवं सक्रिय सहकारी सोसायटियों की संख्या क्रमश: 3396, 3029, 1002, 2027, 17 एवं 10 हैं। चन्देरी साड़ियों का वार्षिक उत्पादन 11.506 लाख मीटर, रूपयों में 11 करोड़ है। बुनकर समुदाय में उत्पादन क्रियाएँ मुख्य रूप से चार भागों में विभाजित हैं प्रथम प्रधान बुनकर हैं, जो कि कच्चा माल उपलब्ध कराते हैं एवं उत्पादित माल के विक्रय पर नियंत्रण रखते हैं। द्वितीय, उद्यम गुणवत्तापूर्ण बुनकर जिनके अपने माल के विक्रय हेतु पूर्णत: प्रधान बनुकरों पर निर्भर हैं। अंतिम, सहकारिता से जुड़े हुए बुनकर हैं जो कच्चे माल की पूर्ति एवं उत्पादित माल के विक्रय की गारंटी प्रदान करता है।

चंदेरी साड़ी बुनाई, कला का लम्बे समय से धीरे-धीरे ह्रास होता जा रही है अत: राज्य सरकार द्वारा गणित के.वी.आई बोर्ड द्वारा चंदेरी हथकरघा उद्योग के विकास हेतु पर्याप्त प्रयास किये जा रहे हैं परन्तु अभी तक संतोषजनक परिणाम प्राप्त नहीं सके। अभी भी अधिकांश बुनकर कच्चे माल, कम उत्पादकता, अपर्याप्त साख एवं विक्रय संबंधी समस्याओं से ग्रसित हैं।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं-

1. चंदेरी साड़ी बुनकरों की सामाजिक आर्थिक स्थिति का विश्लेषण करना। 2. साड़ी बुनकरों की समस्याओं का अध्ययन करना। 3. बनुकरों की समस्याओं के समाधान हेतु उचित सुझाव प्रस्तुत करना।

शोध विधि-

अध्ययन हेतु 30 बनुकर परिवारों का चयन दैव निदर्शन विधि द्वारा किया गया व तथ्यों का संकलन साक्षात्मकार अनुसूची द्वारा किया गया। तत्पश्चात् वर्गीकरण सारणीयन तथा विश्लेषण प्रस्तुत किया गया। द्वितीय आंकड़ों का संकलन इन्टरनेट तथा विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं द्वारा किया गया।

विश्लेषण एवं व्याख्या-

बनुकरों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति

अध्ययन क्षेत्र से प्राप्त तथ्यों के आधार पर सर्वाधिक 73.33 प्रतिशत महिला बुनकर तथा पुरुष बुनकर मात्र 26.67 प्रतिशत पाये गये। बुनकरों के शैक्षणिक स्तर के अंतर्गत निरक्ष 40 प्रतिशत, साक्षर 20 प्रतिशत, प्राथमिक 13.33 प्रतिशत माध्यमिक 16.67 प्रतिशत तथा हाई स्कूल स्तर पर 10 प्रतिशत बुनकर पाये गये। अध्ययन में यह तथ्य उभरकर सामने आया है कि सर्वाधिक 83.33 प्रतिशत परिवारों का मुध्य धंधा साड़ी बुनाई है तथा शेष 16.67 प्रतिशत परिवार साड़ बुनाई के अलावा अन्य धंधों में संलग्न पाये गये। साड़ी बुनाई में संलग्न परिवारों में से 30 प्रतिशत परिवार, मासिक आय 1500 रुपये से कम 40 प्रतिशत 1500-2500 रु., 20 प्रतिशत 2500-3500 रु. के मध्य तथा मात्र 10 प्रतिशत 3500 रुपये से अधिक पाये गये।

बुनकरों की समस्याऐं

चंदरी साड़ी बुनकरों की मख्य समस्यायें निम्नलिखित हैं-

1. वित्त संबंधी समस्या-किसी भी उद्योग धंधे के संचालन हेतु पर्याप्त वित्त का होना जरूरी होता है। उसी प्रकार चंदेरी साड़ी बुनकरों को कच्चा माल तथा अन्य निर्माण सामग्री के क्रय हेतु पर्याप्त एवं समयानुसार वित्त का होना महत्त्पूर्ण हैं।

तालिका क्र. 1 वित्त के स्त्रोत

क्र.	वित्त के स्रोत	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1.	स्वयं	01	03.33
2.	साहूकार	18	60
3.	बैंक	03	10
4.	सहकारिता	08	26.67
5.	अन्य	-	-
	योग	30	100

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक 60 प्रतिशत बनुकर परिवार वित्त संबंधी समस्या से ग्रसित पाये गये जो कि साहूकारों एवं महाजनों से उच्च ब्याज दर पर वित्त प्राप्त करते हैं। बैंक अधिकारियों के अहसयोगपूर्ण व्यवहार, संस्थागत साख संस्थाओं, शासकीय वित्त योजनाओं के बारे में ज्ञान की कमी के कारण ही मात्र 10 प्रतिशत बनुकर परिवारों ने बैंक से वित्त प्राप्त किया। सहकारिता से जुड़े बनुकर परिवारों का प्रतिशत 26.67 था। संस्थागत साख की अपूर्णता एवं अनियमितता के चलते अधिकांश बनुकर ऋण बोझ से दबे पाये गये।

2. कच्चे माल की समस्या-चंदरी साड़ी बुनाई में कच्चे माल के रूप में कॉटन, सिल्क तथा जारी का मुख्यत: प्रयोग किया जाता है इसमें से कोई भी कच्च माल स्थानीय रूप से उपलब्ध नहीं होता, जिसको देश के अन्य भागों तथा विदेशों जैसे-चीन, जापान तथा कोरिया से भी मंगाना पड़ता है। क्षेत्र से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार 63.33 प्रतिशत बुनकर समयानुसार पर्याप्त एवं सस्ता कच्च माला की अनुपलब्धता की समस्या का सामना करते पाये गये।

3. उत्पादन संबंधी समस्या-साड़ी उत्पादन एक जटिल एवं परिश्रमी प्रक्रिया है। 43.33 प्रतिशत बुनकर कम उत्पादन की समस्या का समान करते पाये गये। अध्ययन क्षेत्र में कम उत्पादन को प्रभावित करने वाले कारकों में मुख्यत: अपर्याप्त व अनियमित वित्त, महंगा एवं अपर्याप्त कच्चा माल, परम्परागत औजारों का प्रयोग है। उत्पादन कार्य हेतु पर्याप्त जगह की कमी भी उत्पादन को प्रभावित करने वाला अन्य कारण पाया गया। पर्याप्त जगह की उपलब्धता के अभाव में अधिकांश बनुकर परिवारों के करघे छोटे से कमरों में ही संचालित किये जा रहे हैं, वहीं बुनाई खाना व सोना होता है।

4. विक्रय संबंधी समस्या

तालिका क्र. 2. विक्रय के माध्यम

क्र.	विक्रय के माध्य	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1.	प्रधान बुनकर/ स्थानीय व्यवसायी के अधीन	25	83.33
2.	स्वतन्त्र रूप से	02	06.67
3.	सहकारी/सरकारी एजेन्सीयों के अन्तर्गत	03	10
	योग	**30**	**100**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक 83.33 प्रतिशत बनुकर परिवार अपना उत्पादित माल के विक्रय हेतु प्रधान बनुकर व स्थानीय व्यवसायियों पर निर्भर पाये गए। सहकारिता व सरकारी एजेंसियों जैसे-म.प्र. हथकरघा बुनकरों का सहकारिता संघ. म.प्र. लघु उद्योगनिगम, हस्तशिल्प विकास निगम व राज्य वस्त्र निगम के अन्तर्गत 10 प्रतिशत तथा 6.67 प्रतिशत बनुकर परिवार अपना उत्पादित माल स्वतंत्र रूप से सीधे महानगरों के व्यापारियों, व्यापार मेलों व प्रदर्शनियों में बेचते हैं, जिनके प्रतिशत बहुत ही कम है। इस प्रकार स्थानीय व्यवसायी एवं प्रधान बुनकर अधिक मात्र में